उम्मीदों का घोंसला

(पुस्तक के कुछ अंश)

कल अंजली की छुट्टी है। इसीलिए उसने रात में ही कल निपटाने वाले सारे जरूरी कामों की लिस्ट बना ली थी। सुबह 6:00 बजे का अलार्म बजने पर अंजली की आंख खुली। एक नजर अपने पास सो रहे राज पर डाली। राज को देखकर मुस्कराई, उसके चेहरे पर धीरे से हाथ फेर कर अंजली ने उसके माथे को चूम लिया। राज को यूं अकेला सोता छोड़कर काम में जुटने का उसका मन तो नहीं कर रहा था, लेकिन राज के जागने के बाद उसे वक्त ही कहां मिलेगा यही सोचते हुए बिस्तर छोड़ दिया। राज उठते के साथ सीधा उसे ढूढ़ते हुए ही आएगा।

अंजली जल्दी-जल्दी घर के काम निपटाने में जुट गई। तीन दिन बाद राज का जन्मदिन है। आज ही बाजार भी जाएगी ताकि राज के जन्मदिन पर उसकी पसंद की सारी चीजें कर सके। राज के जन्मदिन में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। आगे............

कल अंजली की छुट्टी है। इसीलिए उसने रात में ही कल निपटाने वाले सारे जरूरी कामों की लिस्ट बना ली थी। सुबह 6:00 बजे का अलार्म बजने पर अंजली की आंख खुली। एक नजर अपने पास सो रहे राज पर डाली। राज को देखकर मुस्कराई, उसके चेहरे पर धीरे से हाथ फेर कर अंजली ने उसके माथे को चूम लिया। राज को यूं अकेला सोता छोड़कर काम में जुटने का उसका मन तो नहीं कर रहा था, लेकिन राज के जागने के बाद उसे वक्त ही कहां मिलेगा यही सोचते हुए बिस्तर छोड़ दिया। राज उठते के साथ सीधा उसे ढूढ़ते हुए ही आएगा।

अंजली जल्दी-जल्दी घर के काम निपटाने में जुट गई। तीन दिन बाद राज का जन्मदिन है। आज ही बाजार भी जाएगी ताकि राज के जन्मदिन पर उसकी पसंद की सारी चीजें कर सके। राज के जन्मदिन में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए यही सोचते हुए अंजली जल्दी-जल्दी हाथ चलाने लगी। कुछ किताबें मेज पर पड़ी थी, अंजली किताबों को उठाकर रैक में लगाने लगी, तभी उसकी नजर डायरी पर गई। अंजली को याद आया कि ऋषिकेश वाली आंटी का मोबाइल नंबर फोन से डिलीट हो गया है। आंटी ने चलते समय इसी डायरी में अपना और अंकल का नंबर लिखा था। इस बार राज के जन्मदिन पर अंकल-आंटी को भी बुला ही लेती हूं। अंकल-आंटी को देखकर राज तो खुशी से उछल ही पड़ेगा।

अंजली झटपट डायरी उठाकर नंबर ढूंढ़ने लगी, तभी उसकी नजर डायरी में रखे एक पत्र पर पड़ी। अंजली शून्य भाव से पत्र खोलने लगी। पत्र का शीर्षक पढ़ते ही उसकी आंखें नम हो गईं। ऐसा लगा जैसे वह हजारों मीलों की ऊंचाई से सीधे जमीं पर आ गिरी हो। एक पत्र ने अतीत के पन्ने उसके सामने बिखेर दिए थे। हालांकि, जब से राज उसकी दुनिया में आया है, तब से उसे कुछ सोचने के बारे में फुरसत ही नहीं मिली थी। आज एक कागज के टुकड़े ने फिर से सोचने को मजबूर कर दिया था। अंजली को वहीं सालों पहले वाली घुटन, दर्द और जिल्लत महसूस होने लगी। उसे एक-एक कर सारे चेहरे याद आने लगे थे। अंजली के अंदर अब खड़े रहने की शक्ति नहीं बची, वह लड़खड़ाते हुए पास ही पड़े सोफे पर गिर गई। तकरीबन आठ साल पहले जो घटा वो सब उसकी आंखों के सामने आ गया।

आगरा के इंटर कॉलेज में ग्यारवीं कक्षा में अंजली और प्रेम ने दाखिला लिया था। नया शहर, नया कॉलेज, नए लोग सबकुछ अजाना, बेगाना सा था। कक्षा के बाद दोनों कैंटीन में मिले, जहां एक-दूसरे से जान-पहचान हुई। तब से बारवीं, बीए, एमए और चार साल साथ में नौकरी करते हुए गुजर

गया था। दोनों में पहले दोस्ती हुई, फिर धीरे-धीरे दोस्ती पर प्यार का रंग चढ़ गया। अंजली और प्रेम एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे या फिर ये कहो कि एक-दूसरे के लिए ही बने थे। उन्होंने भी ज़िंदगी में साथ जीने के लिए कसमें वादे किए थे, जो अक्सर लोग प्यार में करते हैं। ढेर सारे सपने देखे थे, अपनी उम्मीदों का घोंसला बनाने के लिए। दिन घण्टों की तरह बीत रहे थे। ग्यारह साल एक-दूसरे के साथ कब गुजर गए पता ही नहीं चला।

अंजली और प्रेम के रिश्ते के बारे में दोनों के परिवार वाले जानते थे, लेकिन मंजूर दोनों में से किसी के भी परिवार को नहीं था। जहां अंजली और प्रेम वक्त के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। वहीं परिवार वाले अपनी पुरानी बेड़ियों और परंपराओं में इस कदर जकड़े थे कि उनको बच्चों की खुशी नजर नहीं आ रही थी।

अंजली से बड़ी दो बहने थीं। प्रेम अपने घर में अकेला था। अंजली की दोनों बहनों की भी शादी हो चुकी थी, दोनों अपनी ससुराल में खुश थीं। बस अब मां-बाप को एक ही चिंता थी कि किसी तरह अंजली के सिर से प्रेम का भूत उतर जाए, तो फिर वे अंजली के भी हाथ पीले कर अपनी जिम्मेदारियों से फुर्सत पा लें। उन्हें इस बात का पूरा यकीन था कि एक न एक दिन अंजली के सिर से प्रेम का भूत उतर ही जाएगा। कभी अंजली की दीदी तो कभी जीजू जो भी फोन करता एक ही सलाह देता कि प्रेम को भूल जाओ और पापा जो रिश्ता बता रहे हैं, उससे शादी कर लो। पचासों बार फोन कर समझाने के बाद भी जब अंजली के कान पर जू नहीं रेंगा, तब झुंझला कर उन लोगों ने भी फोन करना छोड़ दिया। उधर प्रेम के घर में भी यही हालात थे।

प्रेम और अंजली को ऐसे लगता था जैसे दूर जाने भर के नाम से ही घुटन होती है, तो भला एक-दूसरे को छोड़कर किसी और का दामन कैसे थाम सकते हैं। वो अपने सपनों के महल को कैसे तोड़ सकते हैं। वे अपने "उम्मीदों के घोंसले" को कैसे छोड़ सकते हैं। परिवार वाले मानेगे या नहीं.. अगर मानेगे तो कब.. जिंदगी यूं ही कशमकश में गुजर रही थी। दिल्ली में अंजली और प्रेम की जॉब एक ही ऑफिस में थी, लेकिन घर वॉकिंग डिस्टेन्स पर थे। एक रोज सुबह पांच बजे अंजली की डोर बेल बजी। अंजली गहरी नींद में थी। सोचा इतने सुबह कौन आएगा और गेट खोलने की बजाय तकिये से दोनों कान ढकने की कोशिश करने लगी। तभी फिर से बेल बजी...। इस बार अंजली तकिया फेंक कर बेमन से दरवाजा खोलने के लिए उठ खड़ी हुई।

अंजली ने जैसे ही दरवाजा खोला सामने एकदम ताजे फूलों का बुके लेकर प्रेम खड़ा था। अंजली ने एक बारगी अपनी आंखों को मला कहीं वह सपना तो नहीं देख रही है, लेकिन सामने अब भी प्रेम ही दिख रहा था। फूलों की खुशबू से अंजली की सारी नींद काफूर हो गई। अंजली खुशी से चीख

पड़ी, प्रेम तुम इतने सुबह कैसे जाग गए! ये फूल आज तो मेरा दिन ही बना दिया और लपक कर प्रेम के हाथ से बुके छीनकर उनकी खुशबू लेने लगी। तभी प्रेम ने कहा, "अंजली तुम इन फूलों की वजह से इतने बड़े फूल को इग्नोर मार रही हो।" अंजली खिलखिला कर हंस पड़ी ...ओ मेरे बड़े फूल कह कर प्रेम के गले लग गई। प्रेम ने अंजली के कान में फुसफुसाया, जान हैप्पी बर्थडे। अंजली ने प्रेम के गाल पर धीरे से किस करते हुए रिप्लाई किया, थैंक्यू... थैंक्यू सो मच जाना, आई लव यू। प्रेम ने बड़े ही शरारती लहजे में कहा कि घर बुलाकर चाय-नाश्ता कराओगी या फिर आज सिर्फ बातों से ही पेट भरोगी। अंजली प्रेम का हाथ पकड़कर उसे घर में ले आई। प्रेम को बैठने की कह कर खुद चाय बनाने किचन में चली गई।

अंजली चाय लेकर जैसे ही कमरे में आई, तो प्रेम ने उसके हाथ से ट्रे लेकर टेबल पर रख दी। एक गुलाब का फूल लेकर घुटने पर बैठ गया। अंजली ने पहले नॉटी नजरों से प्रेम को देखा और फिर फूल ले लिया। अंजली ने गुलाब की पंखुड़ियों पर उंगलियां फिराते हुए कहा, "मुझे याद है जनाब मुझसे मिलने के बाद मेरे तीसरे जन्मदिन पर 'प्रेम ने अपने प्रेम' का इजहार किया था, उस दिन तो मेरी बोलती ही बंद हो गई थी। तब से लेकर नौ साल गुजर गए मेरे हर जन्मदिन पर दोहरा जश्न होता है। एक मेरे इस दुनिया में आने का और दूसरा तुम्हारा मेरी दुनिया बनने का।"

प्रेम ने उसका हाथ पकड़कर अपनी जेब से अंगूठी निकलते हुए कहा, "मिस अंजली तो क्यों न लगे हाथों हम आज के दिन ही अपने प्यार को हमेशा के लिए अपना बना ले... क्या तुम मिस अंजली से मिसेज प्रेम बनोगी? क्या तुम इतने बड़े फूल को स्वीकार करोगी? अंजली ने इमोशनल होते हुए हां में सिर हिलाया। प्रेम ने झट से उसकी अंगुली में अंगूठी पहना दी और अंजली को गोद में उठा कर पूरे कमरे का चक्कर लगा दिया। अंजली चिल्लाने लगी प्रेम नीचे उतारो, प्रेम नीचे उतारो प्लीज... कहीं आज खुशी से पागल न हो जाऊं। प्रेम मुझे चुकटी काटो कहीं यह सपना तो नहीं है। प्रेम ने अंजली को बेड पर बिठाकर धीरे से चुकटी काटते हुए कहा नहीं मिसिज प्रेम आप सपना नहीं देख रहीं है, यह हकीकत है। अब से इस दिन तीन-तीन पार्टियां हुआ करेंगी।

दोनों ने पूरा दिन साथ बिताया रात की पार्टी प्रेम के घर पर थी, जिसकी पूरी तैयारी प्रेम के दोस्तों ने कर ली थी। रात आठ बजे प्रेम अंजली को अपने घर पर ले गया। वहां अंजली और प्रेम दोनों के दोस्त आए हुए थे। सबने मिलकर बर्थडे सेलिब्रेट किया। साथ बैठकर गप्पें मारीं। डिनर किया। तकरीबन एक बजे प्रेम अंजली को उसके घर छोड़कर जाने लगा, तभी अंजली ने पीछे से आवाज लगाई, प्रेम सुनिए। आज हमारे साथ ही रुक जाइए प्लीज मना मत करना। प्रेम भला अपने प्यार का प्रस्ताव कैसा ठुकराता। अगली सुबह से दोनों फिर अपनी-अपनी दिनचर्या में ढल गए।

अंजली को अंगूठी पहनाए दो सप्ताह ही गुजरे थे। तभी प्रेम को पता चला कि उसकी मां को कैंसर है। खबर मिलते ही दोनों के चेहरों के रंग उड़ गए थे। प्रेम अगली सुबह ही आगरा मां से मिलने के लिए निकल गया था। उसका घर आगरा से 60 किलोमीटर दूर एक गांव में था। मां का आगरा के एक अस्पताल में इलाज चल रहा था। कभी मां तो कभी अंजली के बारे में सोचते-सोचते प्रेम आगरा पहुंच गया। अस्पताल के कोरिडोर में पापा उसका इंतजार कर रहे थे। पापा प्रेम को मां के वार्ड तक लेकर गए।

अस्पताल के बेड पर मां लेटी थी। शायद सो रही थी या फिर आराम कर रही थी। मां एकदम पतली-दुबली हो गई थी। प्रेम को घर से बाहर रहते हुए 11 साल हो गए थे। इस बीच वो जब भी घर आता मां हमेशा गेट पर ही मिल जाती थी। प्रेम के घर आ जाने से उसकी खुशियां चौगुनी हो जाया करती थी। खुद खाना-पीना भूलकर अपने लाडले के लिए न जाने क्या-क्या पकाती रहती थी। प्रेम जब मना करता तो कहा करती कि वहां तुझे ये सब कहां खाने को मिलता होगा, इसलिए चुपचाप से खा ले। जब तेरी शादी हो जाएगी फिर नहीं बनाऊंगी। फिर बहू बनाकर तुझे खिलाया करेगी। हालांकि, बहू तो अभी भी खिलाती है, लेकिन मां के सामने ये बात वो कभी कहता नहीं था। आज पहली बार मां को यूं लेटा देख प्रेम अपने आंसू नहीं रोक पाया और मां की बांह पकड़ रो पड़ा था। मां ने बड़ी मुश्किल से सिर्फ आंख खोलकर इशारा किया कि वो ठीक हैं, तू क्यों रो रहा है।

मां को बचाने के लिए प्रेम ने आगरा से लेकर दिल्ली एम्स तक हर जगह बात की, लेकिन उनकी रिपोर्ट्स देखकर हर जगह डॉक्टर हाथ खड़े कर देते थे। उसने डॉक्टरों से मिन्नतें भी की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अंततः डॉक्टर ने प्रेम को कहा, "प्रेम अपनी मां को घर ले जाओ। आखिरी समय में इनकी इच्छाओं का ख्याल रखो।" अगली सुबह ही मां को घर लाया गया। न कुछ खाने की, न पीने की, मां की तो बस एक ही इच्छा थी कि उसका बेटा अब अपना घर बसा ले। उन्होंने लड़की भी देख रखी थी। अब तक प्रेम को उम्मीद थी कि एक न एक दिन मां भी अंजली को बहू मान लेगी और उसे बहुत प्यार करेगी। आज उसकी उम्मीद टूट रही थी।

प्रेम मां को मना नहीं कर सकता था, लेकिन उसने पापा को समझाने की बहुत कोशिश की थी। पापा अगर एक बार मां से अंजली के लिए बात कर लेंगे, तो मां भी अंजलि को अपनी बहू स्वीकार लेंगी। लेकिन पापा नहीं पिघले उन्होंने अपना फैसला सुना दिया कि उस लड़की को हम किसी भी कीमत पर अपने घर की बहू नहीं बनाएंगे। हमने लड़की पसंद कर ली है, तुम्हारी मां को बहुत

पसंद है। तुम मां के जीते जी उनकी पसंद की लड़की से शादी कर लो, तो उनकी आखिरी इच्छा तो कम से कम पूरी हो ही जाएगी। अगर उस लड़की से रिश्ता रखना है, तो हम से रिश्ता तोड़कर जाना होगा। भूल जाना कि हमारा परिवार था। भूल जाना कि हमारे मां-बाप थे।

दरअसल अंजली और प्रेम अलग-अलग जाति से थे यही बात उनके घर वालों को गवारा नहीं थी। प्रेम ब्रहामण था और अंजली बनिया। दोनों के पास अच्छी नौकरी है, एक-दूसरे के लिए हर एंगल से परफेक्ट हैं। लेकिन ये सब दोनों के घर वालों को कभी नजर नहीं आया। परिवार वालों को सिर्फ जाति नजर आती थी। प्रेम इस हालात में न तो घर वालों को छोड़ सकता है और ना ही अंजली का दिल तोड़ सकता है। अंजली का ही क्यों खुद भी तो बिना उसके लाइफ इमेजिन नहीं कर सकता। ऐसे में क्या करें? पूरी रात इसी उधेड़बुन में गुजर गई। अंजली का दो-तीन बार फोन भी आया, लेकिन यह सब बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

अगली सुबह ही उसने अंजली को फोन किया। प्रेम की आवाज सुनते ही अंजली समझ गई कि मां की तबियत बहुत खराब हो गई है, शायद इसीलिए प्रेम बहुत परेशान है। प्रेम के रोने की आवाज आ रही थी। अंजली बात करते हुए उसे चुप कराने कोशिश कर रही थी। साथ ही सोच रही थी कि मैं भी छुट्टी लेकर प्रेम के घर चली जाती हूं। उसे इस वक्त मेरी बहुत जरूरत है। उधर प्रेम थोड़ा शांत हुआ, तो उसने सारी बात बताई। उधर से सबकुछ सुनकर अंजली को ऐसा लगा जैसा उसका सब कुछ लुट गया हो।

अंजली ने प्रेम को थोड़ी देर में फोन करने की कह कर फोन काट दिया था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। अनगिनत विचार आ रहे थे, जा रहे थे। वह प्रेम को किसी और का होता नहीं देख सकती, लेकिन वह स्वार्थी भी तो नहीं बन सकती, उसकी वजह से प्रेम का परिवार छूट जाएगा। मां की इच्छा अधूरी रह जाएगी। इस गिल्ट के साथ वह जिंदगी भर कैसे जिएगी। बहुत सोचने के बाद उसने प्रेम को फोन लगाया। प्रेम को मां की पसंद की लड़की से शादी करने के लिए हां करने को बोल दिया। आसान नहीं था, लेकिन वह जानती थी। प्रेम को इस वक्त उसकी जरूरत है, वह प्रेम की ताकत है कमजोरी नहीं। उस पूरी रात दोनों फोन पर बात करते हुए बहुत रोये थे। उसके बाद कई रातें नहीं कई महीनों रोयें, लेकिन अकेले-अकेले।

प्रेम ने मां से शादी के लिए हां कर दी। अगले आठ दिन में प्रेम की शादी होने वाली थी। दोनों बुत बनकर बस काम करे जा रहे थे। न कोई इच्छा थी और ना ही किसी से शिकायत। दोनों दुनिया वालों को दिखाने के लिए हर दिन खुद को मजबूत बनाते, लेकिन शाम होते-होते खुद ही बिखर जाते। प्रेम की शादी हो रही। कहीं प्रेम कमजोर न पड़ जाएं यही सोचकर अंजली ने शादी से पहले ही बात करना बंद कर दिया।

प्रेम की शादी हो चुकी थी। उसके कुछ दिनों बाद अंजली को पता चला कि वह मां बनने वाली है। अगर प्रेम और अंजली साथ होते तो उनके लिए यह बहूत बड़ी खुशखबरी थी, लेकिन अब तो जो भी है सिर्फ अंजली के लिए प्रेम से कोई वास्ता नहीं। यही सोच कर उसने प्रेम को नहीं बताने का फैसला कर लिया। अब वह प्रेम को नहीं बता सकती थी। ऐसे में उसने अपनी मां को बताया। बस फिर क्या था तूफान आना था सो आ गया। घर वाले सुबह शाम प्रेम को कोस रहे थे। धोखेबाज था, मतलबी था, देख कहती थी न छोड़ दे उसे आज वहीं तुझे इस हालत में छोड़कर खुद खुशी से जी रहा है। तुझे छोड़कर किसी और से शादी कर ली। उसने सिर्फ तेरा इस्तेमाल किया है। अब अंजली क्या बताए कि आप लोग तो हमेशा से चाहते थे कि मैं प्रेम को छोड़ दूं। आज जब हालत ऐसे आ गए कि हमें अलग होना पड़ा, तब भी दोष उसी को दे रहे हो। बात यहीं खत्म नहीं हुई पापा-मम्मी ने फोन कर प्रेम को खबर सुनाने के साथ ही अपनी भड़ास भी निकाली।

अगली सुबह मम्मी-पापा और प्रेम अंजली के घर पर थे। प्रेम अंजली का फैसला सुनना चाहता था। अगर वह चाहे तो मां-पापा की बात मानकर अबॉर्शन कर दे। अगर बच्चे को जन्म देना चाहती है, तो बच्चा उसे सौंप कर अपनी जिंदगी में आगे बढ़ जाए। उसने खुद ही समझ लिया था कि अब उसका अंजली पर कोई हक नहीं है। मम्मी-पापा किसी भी शर्त पर इस बच्चे को दुनिया में लाने के फेवर में नहीं थे। उन्होंने यहां तक कह दिया कि अगर अंजली इस बच्चे को जन्म देगी, तो हम दोनों का मरा मुंह देखेगी। हम दोनों की लाश से होकर यह बच्चा इस घर में आएगा। आखिरकार निर्णय हो गया। कल सुबह अस्पताल जाकर अबॉर्शन कराना है। उस रात अंजली बहुत रोई थी। उसी रात उसने अपने और प्रेम के बच्चे के लिए यह पत्र लिखा था -

मेरे बच्चे तुम्हरा दिल अभी धड़का भी नहीं है, लेकिन तुम्हारी माँ को तुम्हारी धड़कने सुनाई दे रहीं हैं। जब तुम इस दुनिया में आओगे तब तुम्हें अपनी गोद में लेने का ख्याल भर ही इतनी खुशी दे रहा है, तो मेरे बच्चे तुम्हें गोद में लेकर कितना शुकून मिलेगा। तुम्हारी किलकारियां, तुम्हारी

शरारतें, तुम्हारे नाजुक-नाजुक हाथों की छुअन भर का अहसास तुम्हारी मां अभी से कर रही है। आज जब तुम्हारी मां को खुश होना चाहिए, तब वह अपनी बेबसी पर आंसू बहा रही है। मेरे बच्चे ये सारे आंसू एक जैसे नहीं हैं - कुछ आंसू रंज-ओ-गम के हैं तो कुछ पश्चाताप के।

कल तुम्हारे साथ जो होगा उसे सोच कर तुम्हारी मां अभी से सिहरी हुई है। जब तुम्हारे नाजुक अंगों को औजार चुभेंगे वो दर्द तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी मां ज़िंदगी भर महसूस करेगी। जब तुम्हें टुकड़ा-टुकड़ा कर के तुम्हारी मां से अलग किया जायेगा, उन्हीं टुकड़ों के साथ तुम्हारी माँ तुमसे दूर होकर ताउम्र के लिए बिखर जाएगी।

तुम्हारी मां तुम्हें इस दुनिया में लाना चाहती है। जीने का हर अधिकार देना चाहती है, लेकिन वो हार गई। इस दुनिया से, परिवार से, अपनों से और अपने आप से। तुम्हारी मां तुम्हें नहीं बचा पा रही है, तुम्हें इस दुनिया में आने से पहले खो दिया। क्या करूं मेरे बच्चे तुम्हारी मां बहुत कमजोर है, वो बहुत मजबूर है...हो सके तो अपनी मां को माफ कर देना। इस मां से ज्यादा अभागिन मां शायद दूसरी तुम्हे कोई नहीं मिलेगी। हत्यारिन है तुम्हारी मां, जो अपने ही बच्चे को मरते हुए देखेगी। इसके लिए जो भी सजा तुम दोगे मेरे बच्चे तुम्हारी मां को मंजूर होगी। पर हो सके तो अपनी मां को माफ कर देना। माफ कर देना...।।

तुम्हारी

बेबस मां

अगले दिन अंजली मम्मी-पापा के साथ अबॉर्शन के लिए अस्पताल पहुंची गई। मम्मी-पापा बाहर इंतजार कर रहे थे। डॉक्टर अपनी तैयारी में जुटे थे। अंजली का घबराहट से दम घुट रहा था। वह अपने प्यार की निशानी को मारना नहीं चाहती थी। वह खुद पर डिपेंड है, कई सालों से मां-पापा, दीदी-जीजू सभी तो नाराज ही हैं, तब वह खुद ही तो सब कुछ कर रही थी। किसने उसका सपोर्ट किया? इस दुनिया में उसके जीने के लिए यह बच्चा काफी है। यही सोचकर चुपके से हॉस्पिटल से बाहर आ गई। मम्मी-पापा या कोई और उसे ढूढ़ता उससे पहले ही वह फटाफट बैग पैककर किसी को बिना बताए दिल्ली छोड़ चुकी थी। पापा को सिर्फ एक मैसेज किया था कि प्लीज पापा मुझे ढूढ़ने की कोशिश मत करना। मैंने दिल्ली, आपका समाज, घर परिवार सब छोड़ दिया है।

प्रेम के अंजली की जिंदगी से जाने और बच्चे के आने के दौरान जिंदगी में कितना दर्द, घुटन और अकेलापन आ गया था। और शिकायत भी किससे करें उसी ने तो यह सब चुना है। इसके लिए किसे दोषी माने प्रेम को, परिस्थितियों को या फिर खुद को इसका फैसला अंजली आज तक नहीं कर सकी।

देहरादून में एमए की पढ़ाई के दौरान एक वार्डन आंटी थी, जो उससे बहुत प्यार करती थी। प्रेम और अंजली के रिश्ते के बारे में भी सब जानती थीं। वह ऋषिकेश में उन्हीं आंटी के घर पहुंच गई थी। आंटी ने अंजली की पूरी बात सुनने के बाद मां की तरह फर्ज निभाया। अंजली करीब डेढ़ साल उन्हीं के पास रही। नौ महीने पूरे होने पर उसने एक प्यारे से बेटे को जन्म दिया था, बेटे को गोद में लेते ही अंजली को लगा कि उसे फिर से प्रेम मिल गया है। महीनों बाद उसे ज़िंदगी मिल गई है। इन सात महीनों में पहली बार अंजली के चेहरे पर मुस्कान देखकर आंटी-अंकल भी बहुत खुश हुए। आंटी ने पूरे अस्पताल में मिठाइयां बांटी। इस बीच उसे किसी ने ढूढ़ने की कोशिश भी नहीं की थी। शायद प्रेम ने भी नहीं। एक साल बाद अपने बेटे को लेकर वह दिल्ली वापस आ गई थी। इस सबको लगभग आठ साल होने वाले थे। उसने कभी किसी को याद नहीं किया। अपने बेटे के सिवा किसी की फिक्र नहीं की।

आज प्रेम को और मम्मी-पापा को याद कर वह घुटनों पर सिर रख फफक-फफक कर रो रही थी। कहने को तो आज अंजली ने मर्जी से जो दुनिया चुनी वो पूरी तरह महफूज है, जो बगीचा लगाया वो हराभरा है, लेकिन अपने घोंसले को बचाने के लिए अंजली ने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, तब जाकर अपनी ये दुनिया बचाई। तभी नींद से जागकर राज मां को ढूढ़ते हुए आ गया। मम्मा आप रो रहे हो। क्या हुआ मम्मा? मत रोओ मम्मा। सात साल के राज की आवाज सुनकर अंजली ने अपने बेटे को सीने से लगा लिया था। नहीं बेटा मम्मा नहीं रो रही है। मेरे बच्चे तेरे आने के बाद तो मैं कभी रोई ही नहीं। आज तो बस खुशी के आंसू आ गए। तभी डोर बेल बजी। अंजली ने फटाफट से आंसू पोंछे और दरवाजा खोला। आठ साल बाद मम्मी-पापा को सामने देख कर गला रुंध गया और तीनों आपस में बात नहीं कर पा रहे थे सिर्फ आंसुओं के साथ गिले-शिकवे बह रहे थे। राज कुछ समझ पाता इससे पहले "'मैं हूं तेरा नानू" कहकर पापा ने राज को गोद में उठा लिया था....।।।